

# पंचमहाल जिल्लाना कालोल तालुकामां मानव विकासना संदर्भमां आरोग्य अंगेनी परिस्थितिनु अभ्यास

डॉ. हरीगोपाल गिरधरलाल अग्रवाल, किशोर धनशुभाध गोहिल

पी.एच.डी. गाँड,  
श्री गोविंदगुरु युनिवर्सिटी, गोधरा.  
अध्यक्ष श्री,  
अर्थशास्त्र विभाग,  
श्री के. आर. देसाय आर्ट्स एन्ड कोमर्स कोलेज,  
आलोड, ज. दाहोड.

पी.एच.डी. स्टुडन्ट,  
श्री गोविंदगुरु युनिवर्सिटी, गोधरा.

## सारांश

भारत ये गामडाओनो बनेलो देश छे. त्यां २/३ जेटली वस्ती रहे छे. जे राष्ट्रीय विकासनी करोडरभूष कही शकय. अटले ज गामडाओना मानवीओना विकास विना राष्ट्रनो विकास शकी नथी येम कहीये तो कोँ अतिशयोक्ति नथी. भारत माटे इक्त राजनैतिक आआदी पर्याप्त नथी पए येनी आर्थिक अने आरोग्यनी सक्षमता पए अटली ज जरूरी छे. मानव विकास ये निरंतर यालती अेक बहुआयामी अने जटिल प्रक्रिया छे. सर्व स्पर्शी, सर्वग्राही, समतोल अने अक्षय विकास अे कोँपए राष्ट्रनी अंभना अने अग्रिमता होय छे. तात्कालिक जरूरियातने पूर्ण करवा माटे टूंकगाणाना विकास नहि परतुं टकाउ अने कायमी विकास, भावि पेढीनो विचार करीने तेमज कुदरती संपत्ति अने पर्यावरणनुं जतन अने संतुलन जाणवीने वृद्धि अने विकास करवानी यर्या छेल्ला एसकाथी वैश्विक स्तरे केन्द्र स्थाने रही छे. मात्र विज्ञान अने टेक्नोलोजीनो विकास के मात्र आर्थिक विकास नहीं परंतु पर्यावरणीय संतुलन जाणवी राभीने साथोसाथ मानव आरोग्यनो विकास पए थवो जोँअे तेवी विकासनी संकल्पनाओ वैश्विक स्तरे सर्व संमतिथी स्वीकारायो छे.

की-शब्द: मानव, विकासनुं महत्व, आरोग्य, परिबणो, परिस्थिती.

## प्रस्तावना:

मानव विकास शब्दनु प्रयोग आज्जे भुब ज प्रचलित अने सर्व सामान्य बनी गयो छे. परंतु मानव विकासनी संकल्पना अंगे बौद्धिकोमां सर्व संमति जोवा मणती नथी. सामान्य रीते मानव विकासनो भ्याल अत्यारे सापेक्ष तुलनना संदर्भमां जोवा मणे छे. पश्चिमना देशो विकसित देशो छे. अने तेनी सरभामणीमां पूर्वना देशो विकासशील छे तेवुं मानवामां आवे छे. मानव विकासना संदर्भमां पूर्व अने पश्चिमना देशोनी तुलना करवामां

आवे છે. આપણાં દેશની વાત કરીએ તો પણ ગુજરાત, મહારાષ્ટ્ર, કર્ણાટક જેવા રાજ્યોને બીજા રાજ્યોની સરખામણીમાં વધુ વિકસિત માનવામાં આવે છે. આથી કહી શકાય કે માનવ વિકાસએ સાપેક્ષ તુલનાત્મક ખ્યાલ છે.

માનવ વિકાસની સંકલ્પના વિશે સ્વાવલંબી અભિગમ ધરાવનાર મહાત્મા ગાંધીએ એવા અભિપ્રાયો વ્યક્ત કર્યા છે કે “જ્યાં સુધી ગરીબમાં ગરીબ માણસને વિકાસના કેન્દ્રમાં ન રાખવામાં આવે ત્યાં સુધી લોકોની મુશ્કેલીઓ ઓછી ન થાય, તેમના જીવન ધોરણમાં નોંધપાત્ર સુધારો ન થાય અને તે લોકો કોઈપણ ભેદભાવ વિના માનવ વિકાસ પ્રક્રિયામાં સક્રિય ભૂમિકા ન ભજવે ત્યાં સુધી સાચા અર્થમાં વિકાસ શકી નથી.” બીજી રીતે કહીએ તો ગામડાં ત્યારે જ વિકસિત થશે કે જ્યારે તે સ્થાનિક લોકોની પાયાની જરૂરિયાત સંતોષવામાં આત્મનિર્ભર બને. પહેલાના સંદર્ભમાં એ જરૂરિયાત રોટી, કપડાં અને મકાન સુધી મર્યાદિત હતી પણ આજના વૈશ્વિક યુગમાં પારસ્પરિક નિર્ભરતા વધી છે સાથેસાથે સંકલનની મુશ્કેલીઓમાં પણ વધારો થયો છે તેથી માનવીય આરોગ્ય એ આજના સંદર્ભમાં માનવીય વિકાસનું એક અગત્યનું પરિબળ છે. આથી હવે મહત્વપૂર્ણ એ છે કે લોકોના જીવન ઉત્થાન માટે કેવી રીતે વહીવટી, આર્થિક અને સામાજિક શોષણ અટકાવીને માનવીય આરોગ્ય વિકાસની પ્રક્રિયાને પારદર્શક, શુદ્ધ અને ઝડપી બનાવવી વગેરે બાબતોનો વિચાર કરી આત્મવિશ્વાસ તેમજ આત્મનિર્ભરતાનું લક્ષ્ય પ્રાપ્ત કરવાનું છે.

આઝાદી બાદ ભારતે અનેકવિધ ક્ષેત્રે પ્રગતિ કરી છે અને માનવ વિકાસની દિશામાં સારી એવી પ્રગતિ મેળવી છે. તેમ છતાં રાષ્ટ્રીય જીવનના અન્ય પાસાના એકંદર વિકાસની સાથે ગ્રામ્ય વિસ્તારોનો માનવ વિકાસ તાલ મેળવી શક્યો નથી. ગ્રામ માનવ વિકાસ વર્ષોથી રાજકીય નીતિ ઘડતર અને નિર્ણયકરણમાં અંદર-બહાર થતું રહ્યું છે, અને છેવટે તેને આયોજનમાં સંકલિત ખ્યાલ સ્વરૂપે દાખલ કરવામાં આવ્યું છે. દેશના માનવ વિકાસમાની વર્તમાન અસંતુલા દૂર કરવા છેલ્લા કેટલાંક વર્ષોમાં રાષ્ટ્રીય નવનિર્માણમાં ગ્રામ માનવ વિકાસને કેન્દ્રમાં મોખરે મૂકવા જરૂરી પગલાં ભરવામાં આવ્યા છે.

ગ્રામીણ ક્ષેત્રની મોટાભાગની વસ્તી ગરીબી રેખાની નીચે જીવે છે. આમાં જમીન વિહોણા મજૂર, નાના અને સીમાંત ખેડૂતો, કારીગરો અને સમાજના અન્ય નબળા વર્ગોનો સમાવેશ થાય છે આ તમામ લોકો આર્થિક સંક્રમણ, શોષણ, ભેદભાવ અને માનસિક ત્રાસ વગેરેથી ખૂબ જ પ્રભાવિત હોય છે. તેઓની અતિશય ગરીબાઈ અને અમાનવીય રહેણાંક પરિસ્થિતિના કારણે જ નવી નીતિ નિર્ધારણમાં ગ્રામ્ય પ્રજા લક્ષી સુધારાઓને પ્રાથમિકતા આપવામાં આવી છે અને તેમના આરોગ્યના સુધારા માટે ઘણાં પગલાં ભરવામાં આવ્યા છે. રાષ્ટ્રીય અને આંતરરાષ્ટ્રિય કક્ષાએ આ લોકોની જીવનશૈલીમાં સુધારો કરવો એ મહત્વની ચર્ચાનો વિષય છે.

### સંશોધન ઉદ્દેશ્ય:

- માનવ વિકાસના મૂળભૂત પરિબળો ચકાસવા કાલોલ તાલુકાના સંદર્ભમાં ચકાસવા
- માનવ આરોગ્યને અસર કરતાં પરિબળો ની કાલોલ તાલુકાના સંદર્ભમાં મુલવણી કરવી

### માનવ આરોગ્ય વિકાસના હેતુઓ:

માનવ આરોગ્ય વિકાસના હેતુઓ આ પ્રમાણે ગણાવી શકાય.

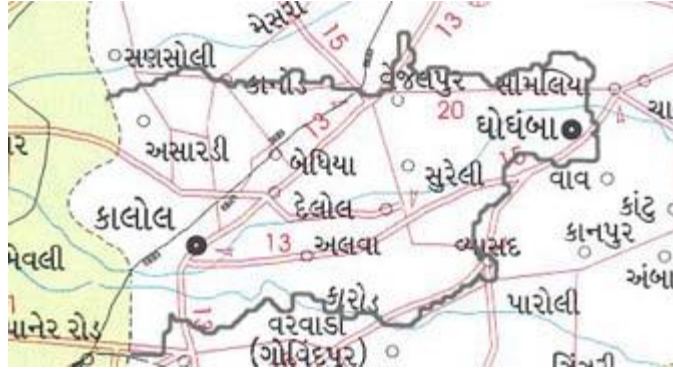
- કાલોલ તાલુકાના માનવ આરોગ્ય વિકાસની સ્થિતિ ચકાસવી.
- માનવ આરોગ્ય સેવાઓની સામાજિક અને આર્થિક માળખા સ્વરૂપે પૂર્તતા કરવી.

- मानव आरोग्यना उत्कर्ष माटे योग्य सूचनो करवा.
- कालोल तालुकाना कुटुंबोनाना मानव आरोग्य विकासमां वधारो करवो अने ध्यान राखवुं के आवनारा वर्षोमां गरीबी रेभानी नीचे जवता लोको ते परिस्थितिमांशी बहार आवे अने आ माटे सतत प्रयत्नशील रहेवुं.

आ हेतुओ पूरा करवा माटे योग्य मानव आरोग्य विकासलक्षी व्यूह-रचनानी जरूर छे. आ व्यूह रचना ओ मानव आरोग्य विकासमां सुधारा माटेनी मूणभूत जरूरियात छे. जेना द्वारा जवननी तकोमां उमेरो करीने ग्रामीण मानव क्षमतामां वधारो करी शक्य छे. जे मानव आरोग्य स्थितिमां सुधारो करे छे. मानव आरोग्य विकासनी समग्र प्रक्रिया माटे ते जे वातावरणमां कार्यरत छे, तेनी तमाम कामगीरीनुं संकलन जरूरी छे, जे योक्स हेतुसर भविष्य माटे अमुक परिस्थितिनुं निर्माण करे छे. आ परिस्थिति मानव आरोग्य विकासनी प्रक्रियाने ञडपी बनावे छे.

### कालोल तालुको:

कालोल तालुको भारत देशना पश्चिम भागमां आवेला गुजरात राज्यना मध्य पूर्व भागमां आवेला पंचमहाल जिल्लानो महत्वनो तालुको छे. कालोल आ तालुकानुं मुख्य मथक छे. तालुकानुं अक्षरज्ञान ५७.२२ टका छे. रेल्वे लाइन २ क्मी. लांबी छे. कालोल तालुकानुं भौगोलीक स्थान अक्षांश २२.३७ रेभांश ७३.२२ छे. तालुकानी मुख्य नदीओमां गोमा, करड, रुपारेल, मेशरी नदीओनो समावेश थाय छे. मुख्य पाको मकाछ,बाजरी,तुवर, डांगर छे. (<https://panchmahaldp.gujarat.gov.in/gu/taluka/Kalol/home>)



कालोल तालुको

### कालोल तालुकामां मानव आरोग्य विकासनी स्थिति

कालोल तालुकामां सामाजिक-आर्थिक माणभानो, विविध सरकारी तेमज बिनसरकारी संस्थाओ तथा तेमना आंतरिक संबंधोनुं अने प्रक्रियाओनुं मूणभूत रूपांतर पूर्ण पड़े साकार थयुं नथी. आ संदर्भमां कालोल तालुकाना विकासनी साथी व्यूह रचना ओवी होवी जोछे के जेथी विकासना लाभ कालोल तालुकानी प्रजाने मणता थाय. आ माटे सर्व व्यापी व्यवस्थापनना सामान्य सिद्धांतो प्रमाणे कछ रीते कार्यो हाथ धरी शक्य के जेथी छिछित मानव आरोग्य विकासना लक्ष्यांको निर्धारित अने उपलब्ध सुविधाओना संदर्भमां पूरा थछे शके.

मानव आरोग्य विकासनी प्रक्रियाने असर करतां परिबणो अने तेना माटे जरूरी व्यवस्थापनना क्षेत्रो आ प्रमाणे छे.

- प्रतिक्षण अवरोधक मानव वलणो

- वस्ती वधारो, गरीबी अने बेकारी
- पायागत सुविधाओनो अभाव
- योग्य मानव आरोग्य प्रवृत्तियोंनो अभाव
- शैक्षणिक तेमज तालीम विषयक जरूरियात  
मानव आरोग्य विकास माटेनी निश्चित जरूरियातो छे जे आ मुजब छे:
- योग्य किमते दवाओनुं वेयाए थाय ते माटेनुं आयोजन करवुं.
- आरोग्य सेवाओ पूरी पाडती संस्थाओनो योग्य समन्वय.
- कालील तालुका क्षेत्रे योग्य मानव आरोग्य सेवाओ प्राप्त थाय तेवी व्यवस्था करवी.
- मानव आरोग्य तरङ्ग कालील तालुका लोकोनी आवडत अने ज्ञानमां सुधारो करवो.

आम, मानव आरोग्य विकास इक्त अटला माटे ज जरूरी नथी के आपणी मोटा भागनी वस्ती गामडामां वसे छे परंतु देश ना आर्थिक क्षेत्र ने वेग इक्त मानव विकास द्वारा ज आपी शक्य छे. मानव आरोग्य विकास अे समग्र लक्षी विकास साथे संकणायेल अेक पवित्र ज्वाल छे. ते माणभाकीय सवलतो - जेवी के, रस्ता, वाहन व्यवहार, वीजणी, विमाक्षेत्र, बेन्क, ग्रामीण उद्योगो सस्ता घर जेवी पायानी जरूरियातो उपरांत ग्राम्य गरीबी, बेरोजगारी, पोषण अने स्वास्थ्य लक्षी सगवडो, स्थानिक कला अने कारीगरो वगैरेना विकास ना ज्वाल मां सर्वोपरी जरूरियात साथे संकणायेल छे.

### व्यवस्थापननी भूमिका :

मानव आरोग्य व्यवस्थापनना मुख्य पांच कार्यो छे. जे नीचे मुजब गणायी शक्य.

- आयोजन
- व्यवस्थातंत्रनी गोठवणी
- मानव - वलणो
- माहिती संयारना माध्यमो
- अंकुश

आ दरेक कार्य प्रमाणे तेना योग्य उपयोग थकी ज्यारे मानव आरोग्य विकासलक्षी कार्य हाथ धरवामां आवे तो ज विविध मानव आरोग्य विकासलक्षी कार्यक्रमोने कमबद्ध सङ्गता मणी शके छे.

### संशोधननी मर्यादाओ:

उपरोक्त चर्चित परिबणो अे मानव आरोग्य विकासने असर करतां मुख्य परिबणो छे, अही दर्शाव्या उपरांतना पण अनेक जाणीता अने अज्ञाव्या परिबणो मानव आरोग्य विकासने असर करतां होय छे परंतु समग्रलक्षी अव्यास करवो अही संशोधक माटे समय अने संशाधननी मर्यादाने ध्यानमां लछने सर्वे असरकरता परिबणोने आवरी लेवा शक्य नथी. तेथी संशोधके इक्त मुख्य असर करतां मानव आरोग्य विकासना परिबणोने ध्यानमां लछने विहंगावलोकन प्रस्तुत कर्युं छे.

## सारांश :

मानव आरोग्य विकासनी विभावनाने प्रक्रिया वधु व्यापक, संकूल अने समय तथा प्रदेश सापेक्ष होय छे. कोषपण चिंतन जे ते देशनी भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिबलाना परिनिवेशमां जन्मतुं अने विकसतुं होय छे. मानव विकास अे लांबागाणानी सतत चालती प्रक्रिया छे. शरुआतना गाणामां औद्योगिक विकास, विज्ञान अने टेक्नोलोजीको विकास, आर्थिक विकासने विकासना मानदंडो तरीके स्वीकारी देशोमां विकासनी प्रक्रियाने मूलववामां आवी. दायकाओ बाए विकासनो आ भ्याल अेकांगी लाग्यो. मानव विकासनो भ्याल समय जतां सर्वांगी बनवा लाग्यो. सर्व स्पर्शी, समतोल अने विभावक्षम मानव विकासनी संकल्पना वधु स्पष्ट थवा लागी. पर्यावरणीय संतुलन जाणवी राभीने लांबागाणानो टकाठ मानव आरोग्य विकास करवा पर विशेष भार मूकवामां आव्यो. भौतिक विकासनी साथेसाथे मानव आरोग्य विकास पण थवो जोछये ते बाबतनो निर्विवाद पणे वैश्विक स्तरे स्वीकार करवामां आव्यो छे. आम भारतमां मानव आरोग्य विकास पर भार आपवानी विशेष जरूर छे.

## संशोधन अवकाश:

संशोधन मर्यादामां जण्णाव्यां मुजब अहीं इक्त मुभ्य परिबलानुं विहंगावलोकन प्रस्तुत कर्युं छे, तेथी विस्तृत अभ्यास माटे दरेक परिबलानो तलस्पर्शी अभ्यास माटे पूरतो अवकाश छे.

## संदर्भ:

- [1] Kalam, A.P.J (2002). Abdul with Rajan Y.S., 'INDIA 2020 A Vision for the New Millennium', Penguin Books India Pvt Ltd, New Delhi.
- [2] United Nations Development Programme, "Human Development Report (2014)", New York City, July 24, 2014.
- [3] गांधीजी, मोहनदास करमचंद, (2002). "हिन्द स्वराज", नवजुवन प्रकाशन मंदिर, अमदावाए.
- [4] वैष्णव, बिपिनचंद्र (संपादक)(२०००) "ग्राममित्र सहायक (गोकुल ग्राम अने अन्य सहकारी योजनाओ)", नवसर्जन पब्लिकेशन, अमदावाए.
- [5] प. गांधीजी, (संकलन)(१९५९) प्रभु आर. के., "पंचायत राज", नवजुवन प्रकाशन मंदिर, अमदावाए.